Afzal Tareen Aa'mal (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 285
Weekly Booklet : 285

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की एक क़िस्त बनाम

अफ़ज़ल तरीन आ'माल

सफ़हात 21

06 अंगारे सुर्ख़ अफ़ीक़ बन गए
12 दुन्या की हर शै से बढ़ कर दो रक्अतें
16 ज़मीन चालीस दिन रोती है
18 नमाज़ी औरत और मछली (हिकायत)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अफ़्ज़ल तरीन आ'माल**

सिने त़बाअ़त : रजबुल मुरज्जब **1444** हि., जनवरी **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

अफ़्ज़ल तरीन आ'माल

येह रिसाला (**अफ़्ज़ल तरीन आ'माल**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात.

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

(येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़ह़ा 55 ता 69 से लिया गया है।)

अफ़्ज़ल तरीन आ'माल

दुआए अ़त्तार या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला : "**अफ़्ज़ल तरीन आ'माल**" पढ़ या सुन ले उसे पांचों नमाजें बा जमाअ़त, पहली सफ़ में अदा करने की तौफ़ीक़ दे और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब जुमे'रात का दिन आता है, **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों को भेजता है,जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं कोन यौमे जुमे'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरुदे पाक पढ़ता है। (کنز العمال، 1/250، رقم:2174)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ की बरकत से गधा ज़िन्दा हो गया (ह़िकायत)

अल्लाह करीम के नेक बन्दों की नमाज़ें चूंकि ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब से सजी हुई होती हैं, इस लिये इन को ख़ूब **फ़ैज़ाने नमाज़** मिला करता है और इन की दुआ़ओं में भी बड़ी तासीर पैदा हो जाती है, येह ह़ज़रात जब हाथ उठा देते हैं तो **अल्लाह** पाक इन की दुआ़ को रद नहीं

फ़रमाता, इस सिल्सिले में एक ईमान अफ़रोज़ **हिकायत** सुनिये और झूमिये । हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक यमनी मुसाफ़िर का **गधा** रास्ते में मर गया, उस ने वुज़ू किया, **दो रक्अ़त नमाज़** अदा की और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "मौला ! मैं तेरी रिज़ा की ख़ातिर तेरी राह का मुजाहिद बन कर "दसीना" से आया हूं, मैं गवाही देता हूं कि तू मुर्दों को ज़िन्दा करता है और क़ब्र वालों को क़ियामत के दिन उठाएगा, ऐ परवर्दगार ! आज के दिन मुझे किसी का मोहताज न कर, मेरे गधे को ज़िन्दा कर दे ।" (येह कहना था कि) **गधा कान हिलाता हुवा खड़ा हो गया ।** (دلائل النبوۃ،6/48)

न कर रद कोई इल्तिजा या इलाही हो मक़्बूल हर इक दुआ या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अफ़्ज़ल तरीन आ'माल

नमाज़ अपने अवक़ात में अदा करना, मां बाप के साथ भलाई करना और **अल्लाह** पाक की राह में जिहाद करना अफ़्ज़ल तरीन आ'माल हैं। चुनान्चे हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه कहते हैं : मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया : आ'माल में **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से ज़ियादा महबूब (या'नी प्यारा) अ़मल क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : वक़्त के अन्दर **नमाज़**, मैं ने अ़र्ज़ की : फिर क्या ? इर्शाद फ़रमाया : मां बाप के साथ नेकी (या'नी भलाई) करना, मैं ने अ़र्ज़ की : फिर क्या ? इर्शाद फ़रमाया : राहे ख़ुदा में जिहाद करना । (بخاری،1/196،حدیث:527)

बचपन से नमाज़ की आ़दत डलवाइये

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जब बच्चे सात साल के हो जाएं तो उन से पांचों वक़्त की **नमाज़** अदा करवाइये ताकि **नमाज़** की आ़दत पक्की हो। उन को सुब्ह़ सवेरे उठने और वुज़ू कर के **नमाज़** पढ़ने की आ़दत डलवाइये, मगर सर्दियों में वुज़ू के लिये क़ाबिले बरदाश्त गर्म पानी दीजिये ताकि वोह ठन्डे पानी से घबरा कर वुज़ू और **नमाज़** से जी न चुराएं। वालिद साह़िब को चाहिये कि बेटा जब सात साल का हो जाए तो उसे अपने साथ मस्जिद में ले जाएं लेकिन पहले उसे मस्जिद के आदाब से आगाह कर दें कि मस्जिद में शोर नहीं मचाना, इधर उधर नहीं भागना, नमाज़ियों के आगे से नहीं गुज़रना वग़ैरा। नमाज़े बा जमाअ़त में उसे मर्दों की आख़िरी सफ़ के बा'द दूसरे बच्चों के साथ खड़ा करें। इस ह़िक्मते अ़मली की बदौलत اِنْ شَآءَاللّٰه बच्चे का मस्जिद के साथ रूह़ानी रिश्ता क़ाइम हो जाएगा।

बच्चों को भी ऐ भाइयो ! पढ़वाइये नमाज़ ख़ुद सीख कर के उन को भी सिखलाइये नमाज़

बच्चे को सब से पहले दीन सिखाइये

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सब से मुक़द्दम (या'नी पहले) येह है कि बच्चों को क़ुरआने मजीद पढ़ाएं और दीन की ज़रूरी बातें सिखाई जाएं, रोज़ा व नमाज़ व त़हारत और बैअ़ व इजारा (या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त और उजरत वग़ैरा के लेन देन) व दीगर मुआ़मलात के मसाइल जिन की रोज़मर्रा (Day-to-day) ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) पड़ती है और ना वाक़िफ़ी (या'नी मा'लूम न होने की वज्ह से) से ख़िलाफ़े शर्अ़ अ़मल करने के जुर्म में

मुब्तला होते हैं, उन की ता'लीम हो। अगर देखें कि बच्चे को इल्म की त़रफ़ रुज्हान है और समझदार है तो इल्मे दीन की ख़िदमत से बढ़ कर क्या काम है और अगर इस्तिता़अ़त (या'नी हैसिय्यत) न हो तो तस्ह़ीह़ (या'नी दुरुस्त) व ता'लीमे अ़क़ाइद और ज़रूरी मसाइल की ता'लीम के बा'द जिस जाइज़ काम में लगाएं इख़्तियार है। (बहारे शरीअ़त, 2/256 ह़िस्सा :8) लड़की को भी अ़क़ाइद व ज़रूरी मसाइल सिखाने के बा'द किसी औ़रत से सिलाई और नक़्शो निगार वग़ैरा ऐसे काम सिखाएं जिन की औ़रतों को अक्सर ज़रूरत पड़ती है और खाना पकाने और दीगर उमूरे ख़ानादारी (या'नी घर के कामकाज) में उस को सलीक़ा (या'नी क़ाबिलिय्यत) होने की कोशिश करें कि सलीक़े वाली औ़रत जिस ख़ूबी से ज़िन्दगी बसर कर सकती है बद सलीक़ा नहीं कर सकती। (बहारे शरीअ़त, 2/257 ह़िस्सा :8)

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला इन्हें ख़ुल्द में बसाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 429)

बा करामत बाप बेटे (ह़िकायत)

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू क़िरसाफ़ा जन्दरह बिन ख़ैशना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का तरबियते औलाद का जज़्बा मिसाली था, रूमी कुफ़्फ़ार ने इन के एक शहज़ादे को गिरिफ़्तार कर के क़ैदी बना लिया था। जब **नमाज़** का वक़्त होता, ह़ज़रते अबू क़िरसाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने शह्र "अस्क़लान" (मुल्के शाम) के क़ल्ए़ की चार दीवारी पर चढ़ते और बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहते : **"ऐ मेरे प्यारे बेटे ! नमाज़ का वक़्त आ गया है !"** इन के शहज़ादे हमेशा इन की पुकार सुन कर उस पर अ़मल किया करते

थे, ह़ालां कि वोह सेंकड़ों मील की दूरी पर रूमियों के क़ैदख़ाने में क़ैद थे । (معجم صغیر، 1/108 ملخصا)

फ़ज्र की हो चुकीं अज़ानें वक़्त   हो गया है नमाज़ का उठ्ठो !

(वसाइले बख़्शिश, स. 666)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب   صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बालिग़ औलाद की इस्लाह़ कब वाजिब है

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से सुवाल हुवा : वालिदैन का ह़क़ औलादे बालिग़ को तम्बीह (या'नी ख़बरदार करना) वाजिब है या फ़र्ज़ ? जवाबन इर्शाद फ़रमाया : जो हुक्म फ़े'ल का है वोही उस पर आगाही देनी है, (या'नी जैसा काम है वैसा आगाह करने का मस्अला) फ़र्ज़ पर (ख़बरदार करना) फ़र्ज़, वाजिब पे वाजिब, सुन्नत पे सुन्नत, मुस्तह़ब पे मुस्तह़ब । मगर बशर्ते क़ुदरत, ब क़दरे क़ुदरत, ब उम्मीदे मन्फ़अ़त (या'नी जितनी क़ुदरत हो उतना और वोह भी उस वक़्त जब कि मानने की उम्मीद हो), वरना : ﴿عَلَیْکُمْ اَنْفُسَکُمْ ۚ لَا یَضُرُّکُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْ ؕ﴾ (پ7، المائدہ:105) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो) (फ़तावा रज़विय्या, 24/370)

हर क़दम पर नेकी और दरजे की बुलन्दी

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर में त़हारत (या'नी वुज़ू या ग़ुस्ल) कर के फ़र्ज़ अदा करने के लिये मस्जिद को जाता है, तो एक क़दम पर एक गुनाह मह़्व (या'नी मुआ़फ़) हो जाता है, और दूसरे पर एक दरजा (Rank) बुलन्द होता है । (مسلم، ص263، حدیث:1521)

बच्चा अंगारों से खेलता रहा (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का मुबारक ज़माना था, एक नेक बन्दी ने एक मरतबा तन्नूर में रोटियां लगाईं, और वुज़ू कर के नमाज़ शुरूअ़ कर दी। शैत़ान एक औ़रत की सूरत में उस ख़ातून के पास आ कर बोला : बीबी ! तेरी रोटियां तन्नूर में जली जा रही हैं ! **अल्लाह** पाक की नेक बन्दी शैत़ान की बात पर तवज्जोह दिये बिग़ैर **नमाज़** में मश्ग़ूल रही। येह देख कर शैत़ान ने उस ख़ातून के नन्हे मुन्ने बच्चे को उठा कर तन्नूर के अंगारों पर डाल दिया। वोह फिर भी मुतवज्जेह न हुई। इतने में उस ख़ातून का ख़ावन्द घर आया। उस ने देखा कि उस का बच्चा तन्नूर में उन अंगारों से खेल रहा है जिन्हें **अल्लाह** पाक ने "सुर्ख़ अ़क़ीक़" बना दिया है। येह शख़्स ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो गया और तमाम वाक़िआ़ बयान किया। आप ने फ़रमाया कि उस ख़ातून को मेरे पास लाओ ! जब वोह ह़ाज़िर हुई तो आप ने उस से पूछा : ऐ बीबी ! तू कौन सा नेक अ़मल करती है, जिस की वज्ह से ऐसा हुवा ? ख़ातून ने अ़र्ज़ की : "ऐ रूहुल्लाह ! जब बे वुज़ू होती हूं तो वुज़ू कर लेती हूं, जब वुज़ू कर लेती हूं तो **नमाज़** के लिये खड़ी हो जाती हूं, और जब किसी को कोई ज़रूरत पेश आती है तो उस की ज़रूरत पूरी करती हूं, और जो तकालीफ़ लोगों की त़रफ़ से पहुंचती हैं, उन पर सब्र करती हूं।" (نزہۃ المجالس، 1/143)

ह़ाजत पूरी करने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! इस ह़िकायत में हमारे लिये नसीह़त के काफ़ी मदनी फूल हैं, مَاشَآءَاللّٰه वोह नेक नमाज़ी बन्दी मुसल्मानों की

ह़ाजत रवाई (या'नी ज़रूरतें पूरी करने) का ख़ूब जज़्बा रखती थीं और येह बड़े सवाब का काम है जैसा कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो मेरे किसी उम्मती की ह़ाजत पूरी करे और उस की निय्यत येह हो कि इस के ज़रीए़ उस उम्मती को ख़ुश करे तो उस ने मुझे ख़ुश किया और जिस ने मुझे ख़ुश किया उस ने **अल्लाह** पाक को ख़ुश किया और जिस ने **अल्लाह** पाक को ख़ुश किया **अल्लाह** पाक उसे **जन्नत** में दाख़िल करेगा।"

(شعب الایمان، 6/115، حدیث:7653)

ह़दीसे पाक की ईमान अफ़्रोज़ तशरीह़

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़ाजत पूरी करने वाले को बयान कर्दा फ़ज़ीलत उसी सूरत में ह़ासिल होगी जब कि वोह उस बन्दे को सिर्फ़ ईमानी रिश्ते की वज्ह से ख़ुश करना चाहता हो, कोई और ज़ाती मफ़ाद (या'नी ग़रज़, मत़लब) न हो। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (तो उस ने मुझे ख़ुश किया) के तह़्त "**मिरआत**" जिल्द 6 सफ़ह़ा 581 पर लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि ता क़ियामत हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर हर शख़्स के हर ज़ाहिर बात़िन, जिस्मानी दिली ह़ालात की ख़बर है अगर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बे ख़बर हों और मोमिन की ख़ुशी का हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को इ़ल्म न हो तो आप को ख़ुशी कैसे हो ! ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (और जिस ने मुझे ख़ुश किया उस ने **अल्लाह** पाक को ख़ुश किया) के तह़्त फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली से दो मस्अले मा'लूम हुए : **एक** येह कि नेक अ़मल से मोमिन को राज़ी करने और मोमिन की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) के ज़रीए़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी करने की निय्यत करना शिर्क नहीं, रिया (भी) नहीं (बल्कि)

बिल्कुल जाइज़ है, जब कि अपनी नुमूद (या'नी दिखावा) और नामवरी (या'नी शोहरत) मक़्सूद न हो। **दूसरे** येह कि ख़ुदाए पाक की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) सिर्फ़ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) में है, बड़ी से बड़ी नेकी जिस से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) राज़ी न हों उस से ख़ुदाए पाक हरगिज़ राज़ी न होगा, लिहाज़ा हर इबादत में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को राज़ी करने की निय्यत (भी) करनी चाहिये कि येह ज़रीआ़ है रब्बे (पाक) की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) का। हदीसे पाक के इस हिस्से (और जिस ने **अल्लाह** पाक को ख़ुश किया, **अल्लाह** पाक उसे जन्नत में दाख़िल करेगा) के तहत फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि जन्नत ख़ुदाए पाक की ख़ुशनूदी से मिलेगी महज़ (या'नी फ़क़त) अपने अ़मल से नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/581)

यक़ीनन रोज़े महशर सिर्फ़ उसी से ख़ुश ख़ुदा होगा यहां दुन्या में जिस ने मुस्तफ़ा को ख़ुश किया होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 182)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तफ़रीह के लिये वक़्त है, नमाज़ के लिये नहीं

बयान कर्दा नेक बन्दी की हिकायत से हमारी इस्लामी बहनें ज़रूर दर्स हासिल करें और ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो कर नमाज़ों की पाबन्दी की पक्की निय्यत करें। बे नमाज़ी औ़रतें ख़ूब ग़ौर करें ! हो सकता है कि घर के कामकाज और धोने पकाने के बहाने और बच्चों की परवरिश का उ़ज़्र कर के आप दुन्या में किसी को क़ाइल कर भी लें मगर येह तो सोचें कि क्या येह हीले बहाने क़ियामत में भी चल जाएंगे ? हरगिज़ नहीं। क्या येह अफ़्सोस का मक़ाम नहीं ? कि आप के पास

''शॉपिंग सेन्टर'' जाने के लिये तो वक़्त निकल आता है, गलियों बाज़ारों में बे पर्दा फिर कर गुनाह में पड़ने, तफ़रीह़ गाहों में जाने, ''होटलिंग'' के ज़रीए दौलतो सिह़्ह़त बरबाद करने बल्कि ख़ुद अपने ही घर में टीवी पर घन्टों फ़िल्में ड्रामे देखने का गुनाह करने का वक़्त तो निकल आता है लेकिन अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अगर वक़्त नहीं मिलता तो **नमाज़** के लिये नहीं मिलता !

बात आ'ज़मी की मानो न छोड़ो कभी नमाज़ अल्लाह से मिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

इस्लामी चैनल ने नमाज़ी बना दिया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान को मार भगाने, अगर क़ज़ा नमाज़ों का बोझ हो तो उसे उतारने का जज़्बा पाने और गुनाहों भरे चैनल्ज़ देखने के शौक़ से जान छुड़ाने के लिये सिर्फ़ इस्लामी चैनल देखिये। اِنْ شَآءَاللہ दोनों जहानों की बरकतें हाथ आएंगी। आइये ! इस्लामी चैनल की एक अछूती **मदनी बहार** सुनते हैं : एक नौ जवान इस्लामी भाई के घर में केबल लगी हुई थी, जब वोह घर पर मौजूद न होते तो उस पर फ़िल्में ड्रामे देखे जाते थे लेकिन जब **इस्लामी चैनल** का आग़ाज़ हुवा तो उन के घर में मदनी बहारें आ गईं। उन के बच्चों की अम्मी पहले नमाज़ नहीं पढ़ती थीं जब वोह उन्हें नमाज़ पढ़ने का कहते तो वोह त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने कर के नमाज़ से जी चुरातीं और नमाज़ें क़ज़ा कर देतीं। इसी परेशानी के आ़लम में एक दिन गुफ़्तगू करते हुए उन्हों ने अपनी ज़ौजा से कहा कि जब हम काम से फ़ारिग़ हो जाएंगे तो रात को बा'दे नमाज़े इ़शा सोने से क़ब्ल इस्लामी चैनल देख कर सोया करेंगे। चुनान्चे वोह नमाज़े इ़शा से फ़ारिग़ होते ही इस्लामी चैनल ऑन कर के देखना शुरूअ़ कर देते

तो बच्चों की अम्मी भी साथ देखतीं। اَلْحَمْدُلِلّٰه इस्लामी चैनल देखने की बरकतें चन्द ही दिनों में इस त़रह़ ज़ाहिर हुईं कि उन के बच्चों की अम्मी ने न सिर्फ़ नमाज़ की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी बल्कि एक दिन उन से कहने लगीं : मेरी गुज़श्ता ज़िन्दगी की फ़र्ज़ व वाजिब नमाज़ों का ह़िसाब लगाएं कि मेरी क़ज़ा नमाज़ों की ता'दाद कितनी है ? ताकि मैं उन को भी अदा कर लूं। اَلْحَمْدُلِلّٰه इस के साथ साथ उन्हों ने अच्छी अच्छी निय्यतें भी कीं, कि अब मैं पाबन्दी से नमाज़ें अदा करूंगी और बिग़ैर किसी शर्ई मजबूरी के कभी भी नमाज़ में सुस्ती नहीं करूंगी। اَلْحَمْدُلِلّٰه उन को ऐसा जज़्बा मिला कि उन्हों ने अपनी इस निय्यत को अ़मली जामा पहनाते हुए अपनी क़ज़ा उ़म्री नमाज़ें अदा करना शुरूअ़ कर दीं। ता दमे तह़रीर उन का रोज़ाना 100 रक्अ़त कज़ा नमाज़ें अदा करने का मा'मूल है।

जल्द से जल्द क़ज़ा कर लीजिये

مَاشَآءَاللّٰه इस्लामी बहन की मदनी बहार मरह़बा ! इस मदनी बहार में इस्लामी बहन के रोज़ाना 100 रक्अ़तें क़ज़ा नमाज़ें अदा करने का तज़्किरा है। مَاشَآءَاللّٰه अच्छी ता'दाद है। ताहम "नमाज़ के अह़काम" में शर्ई मस्अला यूं लिखा है : **जिस** के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है। लिहाज़ा कारोबार भी करता रहे और फ़ुरसत का जो वक़्त मिले उस में **क़ज़ा** पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं। (درمختار، 646/2) (मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये "नमाज़ के अह़काम" के रिसाले "क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा" का मुत़ालआ़ कर लीजिये)

इस्लामी चैनल तुम को घर बैठे सिखाएगा नमाज़ और नमाज़ी दोनों आ़लम में रहेगा सरफ़राज़

(वसाइले बख़्शिश, स. 633)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक का एह़सान है दो रक्अ़तों की तौफ़ीक़ मिलना

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दे पर दुन्या में सब से बड़ा एह़सान येह है कि उसे **दो रक्अ़त नमाज़** अदा करने की तौफ़ीक़ दी गई।" (معجم کبیر، 8/151، حدیث:7656)

येह किस की क़ब्र है ?

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के क़रीब से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : **येह किस की क़ब्र है ?** सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : फ़ुलां शख़्स की। इर्शाद फ़रमाया : (इस वक़्त) इस के नज़्दीक दो रक्अ़त नमाज़ तुम्हारी बक़िय्या (या'नी बची खुची) दुन्या से ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारी) है। (معجم اوسط، 1/266، حدیث:920)

जन्नत पर दो रक्अ़त नमाज़ को तरजीह़

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर मुझे जन्नत और दो रक्अ़त **नमाज़** में से किसी एक का इख़्तियार मिले तो मैं **दो रक्अ़त** इख़्तियार कर लूंगा, इस लिये कि दो रक्अ़तों में **अल्लाह** पाक की रिज़ा (या'नी ख़ुशनूदी) है जब कि जन्नत में मेरी अपनी रिज़ा (या'नी ख़ुशी) है।"

(مکاشفۃ القلوب، ص222) (मुकाशफ़तुल क़ुलूब (उर्दू), स. 451)

मेरे लिये दुन्या की तमाम अश्या से बढ़ कर दो रक्अ़तें (हि़कायत)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने एक फ़ौत शुदा (इस्लामी) भाई को ख़्वाब में देखा तो उस ने कहा : अगर मुझे शुक्र अदा करने पर कुदरत मिल जाए तो येह मेरे नज़्दीक दुन्या व मा फ़ीहा (दुन्या और इस में जो कुछ है उस) से ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारा) होगा, क्या आप को वोह वक़्त याद नहीं जब मुझे दफ़्नाया जा रहा था और फ़ुलां शख़्स ने खड़े हो कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी थी, अगर मुझे **दो रक्अ़त** पढ़ने की कुदरत मिल जाए तो येह मेरे लिये दुन्या और जो कुछ इस में है उन सब से ज़ियादा पसन्दीदा होगा।

(احیاء العلوم، 5/240 ملخصا) (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 5/600)

क़ब्र के पास सोने वाले ने ख़्वाब देखा (हि़कायत)

एक शख़्स किसी क़ब्र के क़रीब **दो रक्अ़त** नमाज़ अदा करने के बा'द लेट गया। ख़्वाब में उस ने क़ब्र वाले को येह कहते सुना : "ऐ शख़्स तुम अ़मल कर सकते हो लेकिन इ़ल्म नहीं रखते, हमारे पास इ़ल्म है लेकिन हम अ़मल नहीं कर सकते, ख़ुदा की क़सम ! मेरे नामए आ'माल में **नमाज़ की दो रक्अ़तें** मुझे दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है उस) से ज़ियादा प्यारी हैं।" (हि़कायतें और नसीह़तें, स. 56)

अनोखी ख़्वाहिश (हि़कायत)

ह़ज़रते ह़स्सान बिन अबी सिनान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ से वफ़ात के वक़्त पूछा गया : अपने आप को कैसा मह़सूस करते हैं ? फ़रमाया : "अगर मैं जहन्नम से नजात पा जाऊं तो ख़ैरिय्यत है।" फिर अ़र्ज़ की गई : आप की ख़्वाहिश क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "मुझे एक त़वील रात की ख़्वाहिश है कि उस में सारी रात इ़बादत करता रहूं।" (حلیۃ الاولیاء، 3/139، رقم:3467)

मरने वालों की नज़र में आ'माल की क़द्र

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर क़ब्र वालों को (फ़ुज़ूलिय्यात में) ज़िन्दगी के दिन ज़ाएअ़ करने वाले शख़्स का **एक दिन** दे दिया जाए तो येह उन (क़ब्र वालों) के नज़्दीक तमाम दुन्या से ज़ियादा प्यारा हो क्यूं कि अब वोह आ'माल की क़द्रो क़ीमत पहचान चुके हैं और मुआ़मलात की ह़क़ीक़त उन पर खुल चुकी है, उन्हें **एक दिन** की आरज़ू सिर्फ़ इस लिये है कि उन (या'नी क़ब्र वालों) में जो गुनाहगार हो वोह उस **एक दिन** के ज़रीए़ अपने पिछले दिनों के गुनाहों की तलाफ़ी (या'नी तौबा और ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी वग़ैरा) कर के अ़ज़ाब से छुटकारा पा सके और जो तौफ़ीक़ याफ़्ता (या'नी गुनाहों से ख़ाली) हो वोह उस एक दिन (में ख़ूब इ़बादत कर के उस) के ज़रीए़ मर्तबा बुलन्द करवा कर अपना सवाब दुगना (या'नी डबल) करा ले । उन्हें (या'नी क़ब्र वालों को) उ़म्र की क़द्रो क़ीमत उस वक़्त मा'लूम हुई जब उन की वोह उ़म्र पूरी हो चुकी है, अब उन की आरज़ू है कि ज़िन्दगी की एक साअ़त (या'नी कोई घड़ी) ही मिल जाए। जब कि (ऐ ज़िन्दा इस्लामी भाइयो !) तुम्हें येह साअ़त (या'नी घड़ी) ह़ासिल है और हो सकता है तुम्हें इस जैसी और साअ़तें (या'नी लम्ह़ात व अवक़ात) भी मिलें, अगर तुम इन्हें ज़ाएअ़ करने का ज़ेह्न बना चुके हो तो मुआ़मला हाथ से निकल जाने की सूरत में कफ़े अफ़्सोस मलने (या'नी पछताने) के लिये ख़ुद को तय्यार रखना क्यूं कि तुम ने सब्क़त कर के (या'नी आगे बढ़ कर) अपनी साअ़तों (और ज़िन्दगी के अनमोल हीरों) से अपना ह़िस्सा वुसूल नहीं किया ।

(احیاء العلوم، 5/240)(एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 5/599)

जवानी में इबादत, काहिली अच्छी नहीं जब बुढ़ापा आ गया फिर, बात बन पड़ती नहीं

है बुढ़ापा भी ग़नीमत, जब जवानी हो चुकी येह बुढ़ापा भी न होगा, मौत जिस दम आ गई

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

नमाज़ पढ़ कर वहीं बैठे रहने की फ़ज़ीलत

ऐ आशिक़ाने रसूल ! नमाज़ पढ़ कर इधर उधर जाने के बजाए जहां तक हो सके वहीं बैठे रहिये। **अल्लाह** करीम के मा'सूम फ़िरिश्ते आप के लिये मग़्फ़िरत की दुआ करते रहेंगे। चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो बन्दा नमाज़ पढ़ कर जब तक उस जगह बैठा रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते हैं, यहां तक कि बे वुज़ू हो जाए या उठ खड़ा हो। फ़िरिश्तों की दुआए मग़्फ़िरत उस (बैठे रहने वाले) के लिये येह है : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ (या'नी ऐ **अल्लाह** पाक तू इस को बख़्श दे, ऐ **अल्लाह** पाक तू इस पर रहम फ़रमा।)

(مسند ابو یعلیٰ، 5/469، حدیث:6432)

ख़ुदा को याद कर प्यारे वोह साअ़त आने वाली है

आह ! हमारी सुस्तियों का क्या कीजिये ! काश ! मा'सूम फ़िरिश्तों की दुआएं हासिल करने के लिये हमें **नमाज़** पढ़ कर वहीं बैठ कर कुछ विर्दो वज़ाइफ़ करने की सआ़दत मिल जाया करे। दुआए सानी या'नी इमाम अपनी सुन्नतें वग़ैरा पढ़ कर जो दुआ मांगता है उस में तो हर एक को शिर्कत करनी ही चाहिये। अगर **नमाज़** के बा'द "दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत" हो, बा'दे फ़ज्र हल्क़ए तफ़्सीर हो, सुन्नतों भरा बयान हो उन में बैठना और दुन्या व आख़िरत की भलाइयां समेटना चाहिये।

अंधेरा घर, अकेली जान, दम घुटता, दिल उक्ताता ख़ुदा को याद कर प्यारे ! वोह साअ़त आने वाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 182)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

ज़मीन के ह़िस्से की बुज़ुर्गी

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कोई सुब्ह़ व शाम ऐसी नहीं कि ज़मीन का एक टुकड़ा दूसरे को न पुकारता हो, आज तुझ पर कोई नेक बन्दा गुज़रा जिस ने तुझ पर **नमाज़** पढ़ी या ज़िक्रे इलाही किया ? अगर वोह "हां" कहे तो उस के लिये इस सबब से अपने ऊपर बुज़ुर्गी (या'नी बड़ा पन) तसव्वुर करता है।"

(معجم اوسط، 1/171 حدیث:562)

जमाअ़त के बा'द पीछे जाने वालों के लिये दो निय्यतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो जगह बदल बदल कर **नमाज़** पढ़नी चाहिये, जहां जहां **नमाज़** पढ़ेंगे, ज़िक्रो दुरूद करेंगे वोह तमाम मक़ामात क़ियामत के रोज़ गवाही देंगे। जमाअ़त ख़त्म होने पर कई इस्लामी भाई पीछे की त़रफ़ आ कर **नमाज़** पढ़ते हैं, ऐसा करते वक़्त येह दो अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं : (1) सफ़ें मुन्तशिर (या'नी बे तरतीब) देख कर बा'द में आने वालों को इल्म हो जाए कि जमाअ़त ख़त्म हो चुकी है (2) फ़र्ज़ रक्अ़तों के लिये एक ह़िस्सए ज़मीन को गवाह किया तो अब सुन्नतों के लिये दूसरी जगह को गवाह बनाएंगे, मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि किसी **नमाज़** पढ़ने वाले या बैठे हुए अफ़राद को कोहनी या क़दम वग़ैरा न लगे और नमाज़ी के आगे से भी न गुज़रना पड़े कि नमाज़ी के आगे से गुज़रना गुनाह है, नीज़ जो पहले से नमाज़ में हो उस की त़रफ़

चेहरा करना भी ना जाइज़ व गुनाह है, इसी त़रह़ किसी के चेहरे की त़रफ़ नमाज़ शुरूअ़ करना भी गुनाह है।

जगह किस पर रोती है ?

मुसल्मान जिस जगह नमाज़ पढ़ता, ज़िक्रुल्लाह करता है वोह जगह क़ियामत में उस की गवाही देगी। ह़ज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "बन्दा ज़मीन के जिस ह़िस्से पर भी सज्दा करता है वोह क़ियामत में उस की गवाही देगा और जिस दिन वोह मरता है ज़मीन का वोह टुकड़ा उस पर रोता है।"

(کتاب الزہد لابن المبارک، ص115، حدیث:340, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 194)

ज़मीन 40 दिन रोती है

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : ज़मीन 40 दिन तक मुसल्मान पर रोती है।

(کتاب الزہد لوکیع، ص309، حدیث:83, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 194)

आस्मान व ज़मीन क्यूं रोते हैं ?

ह़ज़रते अबू उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : जब मुसल्मान का इन्तिक़ाल होता है तो ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशे (या'नी कोने) यूं पुकार उठते हैं : ऐ **अल्लाह !** ईमान वाला बन्दा फ़ौत हो गया ! पस आस्मान व ज़मीन उस पर रोते हैं। **अल्लाह** पाक उन दोनों से इर्शाद फ़रमाता है : तुम मेरे बन्दे पर किस वज्ह से रोए ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! वोह बन्दा हमारे जिस गोशे (या'नी कोने, कनारे) से भी गुज़रा तेरा ज़िक्र करते हुए गुज़रा। (کتاب الزہد لابن المبارک، ص41، حدیث:161, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 194)

नमाज़ की जगह रोती है

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते

हैं : जब मुसल्मान का इन्तिक़ाल होता है तो ज़मीन में उस की **नमाज़ की जगह** और आस्मान में उस का अ़मल चढ़ने का दरवाज़ा उस पर रोते हैं। फिर आप ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई : ﴿فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ﴾ (پ25، الدخان:29) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए।

(کتاب ذکر الموت مع موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 5/487، حدیث:287, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 194)

आस्मान का दरवाज़ा रोता है

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से **अल्लाह** पाक के इस फ़रमान : ﴿فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ﴾ (پ25، الدخان:29) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए। के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया कि क्या ज़मीन व आस्मान भी किसी पर रोते हैं ? तो आप ने फ़रमाया : हां, क्यूं कि मख़्लूक़ में कोई भी ऐसा नहीं जिस के लिये आस्मान में दरवाज़ा न हो, उसी से उस का रिज़्क़ उतरता है और उसी से उस का अ़मल बुलन्द होता है, पस जब मुसल्मान वफ़ात पाता है तो आस्मान में उस का वोह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता है जिस से उस का अ़मल बुलन्द होता और रिज़्क़ उतरता था, चुनान्चे वोह दरवाज़ा उस पर रोता है और उस या'नी फ़ौत शुदा मुसल्मान के बिछड़ने पर ज़मीन का वोह ह़िस्सा रोता है जहां वोह ईमान वाला **नमाज़** पढ़ता और ज़िक्रे इलाही करता था। और चूंकि क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़मीन पर कोई भी नेक आसार (या'नी निशानात) नहीं थे और न उन की त़रफ़ से बारगाहे इलाही में कोई भलाई ही पहुंची थी लिहाज़ा उन पर आस्मान व ज़मीन नहीं रोए।

(تفسیر طبری، 11/237، حدیث:31122, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 193)

मुझ को बक़ीए पाक में दो गज़ ज़मीन दो हसनैन के तुफ़ैल, मदीने के ताजवर

(वसाइले बख़्शिश), स. 227)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ी औ़रत और मछली (हि़कायत)

बनी इसराईल में एक नेक नमाज़ी औ़रत थी, बद क़िस्मती से उस का शौहर **ग़ैर मुस्लिम** था, वोह अपनी बीवी को **नमाज़** से रोकता था मगर मारपीट के बा वुजूद वोह ख़ातून **नमाज़** न छोड़ती। शौहर ने तंग आ कर एक साज़िश के तहूत कुछ माल अपनी बीवी को दे कर कहा कि इसे महफ़ूज़ जगह पर रख दो, जब मांगूं तब देना। मौक़अ़ पा कर शौहर ने चुपके से वोह माल उठा कर दरिया में फेंक दिया। **अल्लाह** करीम की क़ुदरत से वोह माल एक मछली ने निगल लिया। वोह मछली एक माहीगीर (या'नी मछलियां पकड़ने वाले) के जाल में आ गई, और फ़रोख़्त होने बाज़ार में आई, ख़ुदा की शान कि वोही **मछली** उस के शौहर ने ख़रीदी और पकाने के लिये घर ले आया। उस नेक ख़ातून ने पकाने के लिये मछली का पेट काटा, वोह माल पेट से निकल पड़ा! वोह सारा मुआ़मला समझ गई। उस औ़रत ने वोह माल उसी जगह पर रख दिया। शौहर ने मन्सूबे के मुताबिक़ बीवी से माल मांगा, ताकि माल न मिलने की सूरत में उस पर तोहमत रख कर उसे सज़ा दिलवा सके, मगर **अल्लाह** करीम की रह़मत से बीवी ने माल निकाल कर शौहर के ह़वाले कर दिया, इस पर वोह बहुत ह़ैरान हुवा मगर उस ने सोचा इस में ज़रूर औ़रत की कोई चालाकी है। उस ने इस वाक़िए़ से इ़ब्रत ह़ासिल न की बल्कि बीवी ने जब रोटी पकाने के लिये तन्नूर जलाया तो ज़ालिम ने उसे

जलते तन्नूर में डाल दिया ताकि जल कर फ़ौत हो जाए। तन्नूर में गिरते ही उस नेक नमाज़ी ख़ातून ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में इल्तिजा की। **अल्लाह** पाक ने उस की दुआ क़बूल फ़रमाई, तन्नूर की आग फ़ौरन ठन्डी हो गई और वोह नमाज़ी ख़ातून (नमाज़ की बरकत से) ज़िन्दा बच गई। (نزہۃ المجالس، 1/154 بتغیر) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

أمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

इज़्ज़त के साथ नूरी लिबास अच्छे ज़ेवरात सब कुछ तुम्हें पहनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

इस्लामी चैनल ने मुझे वुज़ू करना सिखा दिया !

शैत़ान की साज़िशें नाकाम बनाने, गुनाहों से बचने का ज़ेह्न पाने, नेकियों की राह अपनाने, और दीनी मा'लूमात बढ़ाने के लिये इस्लामी चैनल देखते रहिये : **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई के एक रिश्तेदार ने अपने तअस्सुरात कुछ यूं दिये : आप ह़ज़रात ने बहुत अच्छा किया कि **इस्लामी चैनल** शुरूअ़ कर के घर बैठे मुसल्मानों को इस्लाम की बातें सिखाना शुरूअ़ कर दी हैं, सच कहता हूं आप के इस्लामी चैनल पर जब मैं ने "**वुज़ू का अ़मली त़रीक़ा**" देखा तो मेरा सर नदामत से झुक गया कि जद्दी पुश्ती मुसल्मान होने के बा वुजूद अभी तक मुझे सह़ीह़ वुज़ू करना भी नहीं आता था मैं खुले दिल से ए'तिराफ़ करता हूं कि **इस्लामी चैनल ने मुझे वुज़ू करना सिखा दिया !**

इस्लामी चैनल में नबी की सुन्नतों की धूम है और शैत़ाने लई़ं रन्जूर है मग़्मूम है

(वसाइले बख़्शिश), स. 633)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"फ़ैज़ाने नमाज़" पढ़ने वाले के लिये अमीरे अहले सुन्नत की दुआ